Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जन्मकुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग – एक अध्ययन

महामहोपाध्याय डॉ. गोविन्द गन्धे* डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव**

* शोध निर्देशक, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन (म.प्र.) भारत
**सेवानिवृत्त वरिष्ठ चिकित्साधिकारी एवं ज्योतिषाचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ज्योतिष शास्त्र के मान्य सिद्धांतों द्वारा व्यवसाय चयन में सहायता प्राप्त होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य जन्मकुण्डली द्वारा व्यवसाय चयन के सिद्धांतों की व्यवहारिकता प्रमाणित करना है। इस अध्ययन में 15 न्यायाधीशों की कुण्डलियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। जिसमें पाया गया है कि कारक ग्रहों एवं भावों का, अत्यधिक प्रभाव व्यवसाय की सफलता में पड़ता है। कानूनविदों में गुरू, शनि ग्रह तथा द्वाद्वशेश का बलशाली होना आवश्यक होता है।

प्रस्तावना – ज्योतिर्विज्ञान प्राचीनकाल में एक स्थापित विद्या रही है तथा उसका उपयोग खगोलीय घटनाओं को समझने तथा उनके प्रभाव से जनमानस को भविष्य की घटनाओं के शुभाशुभ बताने के लिये किया जाता था। वर्तमान में इसके पुर्नस्थापन की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में पूर्वानुमान से, जनसाधारण भविष्य की योजनायें बना सकें।

वर्तमान में हर किसी को, अपने एवं परिवार के जीवनयापन हेतु कुछ न कुछ व्यवसाय करना होता है। विद्याध्ययन काल में ही यह मार्गदर्शन प्राप्त हो जाये कि किस व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी तो जीवन में भी सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

ज्योतिषशास्त्र में, कारक भावों, कारक ग्रहों तथा विभिन्न ग्रहयोगों से व्यवसाय की प्रकृति का निर्धारण निर्देशित किया गया है। व्यवसायों के प्रकार का निर्णय, ग्रहों के स्वरूप, ग्रहबल आदि पर निर्भर करता है, जो ग्रह बलवान होकर लग्न, लग्नेश एवं अन्य आजीविका के स्वरूप अथवा प्रकार को प्रदर्शित करने वाला होता है तदानुसार व्यवसाय का निर्धारण होता है। बृहतपाराशरहोराशास्त्र में अथ वृत्ति निर्णयाध्याय में,

लग्नादिन्दोश्च दशमं प्रबलं वृत्तिदायकम्।
तदिशात् तत्रगात् खेटात्तदंशेशाच्च चिन्तयेत् ॥
तद्दृष्टुश्च तद्राशेः स्वाभावोत्थं वदेत्पुमान्।
तेषां वृद्ध्या भवेद् वृद्धिरन्यथान्यत् फलं स्मृतम् ॥[1]

उक्त उल्लेखित श्लोकों में बलवान लग्न या चन्द्रमा से दशम स्थान से मनुष्य की जीविका एवं व्यवसाय का विचार करना निर्देशित किया गया है।

इसी प्रकार विचारणीय दशम भाव में स्थित राशि, दशमेश, दशमगत्, नवांशेश ग्रह, दशमस्थ ग्रह इनमें से बलवान ग्रह या राशि के स्वभाव अनुसार व्यक्ति की वृत्ति कहें। यदि उक्त राशि या ग्रह बलवान हो तो उत्तम व्यवसाय फल तथा मध्यम बली हो तो मध्यम फल तथा साधारण या हीन बली हो तो क्रमशः साधारण या नाममात्र फल कहें, ऐसा उल्लेख है।

इसी आशय का फलादेश श्रीकल्याण वर्मा विरचित सारावली के कर्मचिन्ताध्याय के निम्न श्लोकों में भी उल्लेखित है,

लग्नाद्दशमे राशौ कर्मफलं यत्प्रकीर्तितं मुनिभिः।
राशिग्रहणस्वभावैर्ग्रहदृष्ट्या तदहमपि वक्ष्ये ॥
होरेन्द्वोर्बलयोगाद्यो दशमस्तत्भा वजं कर्म।
तस्याधिपपरिवृद्ध्या वृद्धिर्ज्ञेयाऽन्यथा हानिः ॥[2]

श्री वैद्यनाथ विरचित जातक पारिजात के दशम भाव फल में निम्नलिखित श्लोक में,

आज्ञामानविभूषणानि वसनव्यापारनिद्राकृषि –
प्रव्रज्यागमकर्मजीवनयशोविज्ञानविद्याः क्रमात्।
कर्मस्वामिदिनेशबोधन गुरुच्छायासुतैश्चिन्तये –
दुक्तानि प्रविहाय पूर्वमशुभे मानी विमानो भवेत् ॥[3]

उक्त श्लोक में दशमेश, सूर्य, बुध, गुरु, और शनि से निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिये :–

आज्ञा, सम्मान, भूषण, वस्त्र, व्यापार, निद्रा, खेती–बाड़ी, प्रव्रज्या, आगम, कर्म या कार्य, जीवन निर्वाह, यश, विज्ञान, विद्या, इन सब का क्रम से विचार करें।

इसके अतिरिक्त धनेश, लाभेश, भाग्येश तथा व्यवसाय से सम्बन्धित भाव एवं षष्ठ भाव (न्यायालीन प्रकरण व वाद–विवाद भाव) व द्वादश भाव (जेल एवं अपराध भाव) से सम्बन्ध का विचार न्यायाधीश की कुण्डली में विचारणीय होता है।

उद्देश्य– ज्योतिषशास्त्र के अनेकानेक उपयोगों में से एक महत्वपूर्ण उपयोग व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करना भी है। वर्तमान में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श का प्रचलन है। कैरियर मार्गदर्शन करते समय यदि फलित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवसाय के विषय का चुनाव किया जाये तो व्यक्ति विशेष की सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में ज्योतिषशास्त्र की इस उपयोगिता को दृष्टिगत् को रखते हुए '***जातक की कुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग का अध्ययन***' किया गया है।

प्रविधि– उक्त अध्ययन के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का उपयोग किया गया –

1. सर्वप्रथम न्यायाधीशों की 15 कुण्डलियों का संग्रह किया गया।
2. ज्योतिषशास्त्र में उल्लेखित व्यवसाय चयन में सहायक विभिन्न ग्रह योगों का अध्ययन किया गया तथा उन ग्रह योगों के परिप्रेक्ष्य में समस्त

कुण्डलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।
विश्लेषण के लिए निम्नानुसार तालिकाओं का निर्माण किया गया :-

1. जन्म लग्न, चन्द्र राशि एवं नवांश लग्न की तालिका 1

तालिका क्रमांक 1: अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में जन्मलग्न, चन्द्रराशि एवं नवमांश लग्न

कुण्डली क्र.	जन्मलग्न	चन्द्रराशि	नवमांश लग्न
1	मेष	तुला	वृष
2	मेष	कर्क	मेष
3	मेष	मकर	वृश्चिक
4	मिथुन	कन्या	वृश्चिक
5	मिथुन	धनु	वृष
6	कर्क	मीन	वृश्चिक
7	कन्या	कन्या	कर्क
8	कन्या	धनु	मिथुन
9	कन्या	कर्क	मिथुन
10	तुला	मिथुन	मेष
11	तुला	वृश्चिक	मीन
12	धनु	मीन	मेष
13	मकर	वृष	मीन
14	मकर	वृष	वृष
15	मीन	तुला	वृश्चिक

2. विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका 2

तालिका क्रमांक 2: अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति

भाव/ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
प्रथम	1	1	4	1	3	2	0	3	0
द्वितीय	2	1	1	0	1	2	0	1	0
तृतीय	3	0	1	4	1	1	2	3	1
चतुर्थ	1	4	3	2	0	2	1	3	1
पंचम	0	2	2	0	1	2	2	1	0
षष्ठ	2	0	1	1	0	0	4	1	2
सप्तम्	1	2	2	1	3	0	0	0	3
अष्टम्	1	1	0	1	0	0	0	0	1
नवम्	0	2	0	0	2	1	0	1	2
दशम्	1	1	0	0	2	2	2	1	3
एकादश	1	1	1	1	2	0	2	.0	1
द्वादश	3	0	0	4	0	3	2	2	1

3. विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका 3

तालिका क्रमांक 3: अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति

राशि/ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	2	0	3	1	1	1	0	0	1
वृष	1	2	0	1	0	2	2	1	1
मिथुन	2	1	2	2	1	0	0	3	1
कर्क	3	1	2	2	1	2	0	0	1
सिंह	1	0	0	3	1	4	1	4	0
कन्या	2	2	1	1	1	0	2	2	1
तुला	0	2	4	1	0	0	2	1	0
वृश्चिक	1	2	1	1	4	1	2	1	1
धनु	2	2	0	3	2	0	4	1	3
मकर	1	1	1	0	3	1	2	1	0
कुम्भ	0	0	1	0	0	2	0	0	4
मीन	0	2	0	0	1	3	0	1	2

4. लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति की तालिका 4

तालिका क्रमांक 4 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

समस्त तालिकाओं का क्रमश: अध्ययन किया गया। अध्ययन करते समय प्रत्येक कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्र राशि एवं नवांश लग्न का गंभीरता से अध्ययन किया गया। इन कुण्डलियों में विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति का अध्ययन किया गया। तत्पश्चात् विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति का अध्ययन किया गया। अंत में लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति का अध्ययन किया गया।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष- उक्त समस्त तालिकाओं के अध्ययन करने के पश्चात् तालिकावार लग्न, भावों में स्थित ग्रहों की तथा राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति व प्रत्येक लग्न के अनुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति का विश्लेषण कुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग के आधार पर निम्नानुसार किया गया :-

जातक की कुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग के अध्ययन निष्कर्ष- न्यायाधीश बनने के लिये धैर्यशीलता, कानूनीज्ञान, राजयोग, निर्णय क्षमता आदि का विधिवत सम्मिश्रण होता है। न्यायाधीश बनने के लिये निम्नलिखित कारक ग्रह, ग्रहयोगों, ग्रह संबंधों तथा भाव एवं भावेशों का प्रभाव पड़ता है, यह निष्कर्ष कुण्डलियों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया है।

जन्म लग्न, चन्द्र राशि एवं नवांश लग्न की तालिका (तालिका क्रमांक 1) **के निष्कर्ष-**

1. मेष लग्न की तीन, कन्या लग्न की तीन तथा मिथुन, तुला व मकर की दो-दो एवं कर्क, धनु व मीन लग्न की एक-एक कुण्डली पाई गई।
2. वृष, सिंह, कुम्भ, लग्न की एवं मेष, सिंह, कुम्भ राशि की एवं सूर्य एवं शनि के नवांश की कुण्डलियों का अभाव पाया गया।
3. चन्द्र लग्न, जन्म लग्न, नवांश लग्न में से अधिकांश कुण्डलियों में मेष या वृश्चिक राशि पाई गई।

अत: निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बुध एवं मंगल का लग्न एवं राशि पर न्यायाधीशों की कुण्डलियों में अत्यधिक प्रभाव रहता है।

विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका (तालिका क्रमांक 2) **के निष्कर्ष-**

1. सूर्य अधिकांश कुण्डलियों में तृतीय, द्वादश, द्वितीय एवं षष्ठ भाव में पाया गया।
2. चन्द्र चतुर्थ भाव में सर्वाधिक चार बार स्थित पाया गया। इसके अतिरिक्त पंचम्, सप्तम् एवं नवम् शुभ भावों में भी पाया गया।
3. मंगल अधिकांशत: प्रथम, चतुर्थ, पंचम् एवं सप्तम् भाव में पाया गया।
4. बुध मुख्यत: तृतीय एवं द्वादश स्थान में पाया गया।
5. गुरू मुख्यत: लग्न, सप्तम्, नवम्, दशम्, एकादश भाव में पाया गया,

अर्थात् लग्न, केन्द्र, भाग्य, कर्म एवं लाभ भाव में स्थित पाया गया।

6. शुक्र द्वादश भाव में सर्वाधिक तीन कुण्डलियों में स्थित पाया गया तथा प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम् तथा दशम् भाव में स्थित पाया गया।
7. शनि जो कि वाद-विवाद एवं मुकदमों का कारक ग्रह है, सर्वाधिक चार कुण्डलियों में इन्हीं विषयों के कारक भाव षष्ठ भाव में स्थित पाया गया। इसके अतिरिक्त तृतीय, पंचम्, एकादश एवं द्वादश भाव में स्थित पाया गया।
8. राहू मुख्यत: लग्न, चतुर्थ, तृतीय एवं द्वादश भाव में स्थित पाया गया।
9. केतु मुख्यत: सप्तम्, दशम्, षष्ठ एवं नवम् भाव में स्थित पाया गया।

अत: उक्त तालिका का निष्कर्ष प्राप्त होता है कि न्यायाधीश की कुण्डली में गुरू मुख्य ग्रह होता है तथा शुभ भावों में स्थित रहता है। इसके अतिरिक्त मंगल, सूर्य, शनि आदि क्रूर ग्रह एवं बुध अधिकांशत: तृतीय, षष्ठ, द्वादश भाव में स्थित रहते हैं।

विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका (तालिका क्रमांक 3) **का निष्कर्ष**

1. धनु राशि में सबसे अधिक 17 ग्रह पाये गये।
2. इसके पश्चात् सिंह एवं वृश्चिक राशि में 14 ग्रह स्थित पाये गये।
3. मिथुन, कर्क और कन्या में क्रमश: 12-12 ग्रह स्थित पाये गये।
4. वृष, तुला एवं मकर में 10, 10, 10 ग्रह स्थित पाये गये।
5. कुम्भ, मीन एवं मेष में क्रमश: 7, 8, 9 ही ग्रह स्थित पाये गये।

अत: निष्कर्ष प्राप्त होता है कि न्यायाधीशों की कुण्डलियों में गुरू के स्वामित्व की धनु राशि तथा मंगल के स्वामित्व की वृश्चिक राशि व बुध के स्वामित्व की मिथुन और कन्या राशि एवं शुक्र के स्वामित्व की वृष एवं तुला राशि बली पाई जाती है।

लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति की तालिका (तालिका क्रमांक 4) **का निष्कर्ष**

1. सात कुण्डलियों में बुधादित्य योग पाया गया, अर्थात् सूर्य, बुध की युति पाई गई।
2. सात कुण्डलियों में गजकेसरी योग पाया गया अर्थात् चन्द्र, गुरू 1, 4, 7, 10 वें स्थान पर अर्थात् परस्पर केन्द्र में हैं।
3. चार कुण्डलियों में बुधादित्य व गजकेसरी दोनों योग पाये गये।
4. अत: 10 कुण्डलियों में बुधादित्य एवं गजकेसरी योग होने के कारण राजसेवा एवं उच्च पद का योग बना।

उपसंहार - भारतीय ज्योतिषशास्त्र मानव के भाग्य, भविष्य, आयु, सन्तान तथा जीवन में घटने वाली घटनाओं की जानकारी देने वाला ऐसा विज्ञान है, जिसे हजारों वर्षों से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में भी दिन प्रतिदिन ज्योतिषशास्त्र में लोकाभिरुचि की वृद्धि हो रही है। नवीन शिक्षा-दीक्षा से सम्पन्न नवयुवक, समुदाय भी दिनानुदिन ज्योतिषशास्त्र की ओर आकृष्ठ हो रहा है।

फलित ज्योतिष में ग्रहों का फल विचारने के लिये ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, ग्रहबल, ग्रहस्थिति आदि जानकर ग्रहों के गुण, धर्म, दृष्टि, स्थान आदि अनेक बातों पर पूर्णरुप से विचार कर ग्रहों की स्थिति आदि द्वारा बनने वाले अनेक योगों पर ध्यान देकर, देश, काल, अवस्था के अनुसार फलादेश किया जाता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनेकानेक उपयोगों में एक उपयोग व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करना भी है। वर्तमान में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श का प्रचलन है। कैरियर मार्गदर्शन करते समय यदि फलित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवसाय के विषय का चुनाव किया जाये तो व्यक्ति विशेष की सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन न्यायाधीश के व्यवसाय के चयन से संबंधित है, इसमें कानून एवं विधि व्यवसाय में राजसेवा को आधार बनाकर उससे सम्बन्धित ज्योतिषीय योगों का विवेचन किया गया है। इसी को आधार बनाकर अन्य व्यवसायों के लिए भी विद्यार्थियों की कुण्डलियों का ज्योतिषीय अध्ययन कर उन्हें यह परामर्श उपलब्ध करा सकते हैं कि जातक को कौन सा व्यवसाय अपनाना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थों की सूची :-

1. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, पाराशर डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2008
2. श्रीमत्कल्याणवर्म-विरचरिता सारावली, डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2025,
3. जातकपारिजात:, वैद्यनाथ पण्डित गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी 2008
4. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, पाराशर डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2008
5. भारतीय ज्योतिष, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली 2008
6. लघुपाराशरी, पाराशर डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2007
7. जातकाभरणम्, ढुण्डिराज श्री सीताराम झा, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार वाराणसी 1982
8. सचित्र ज्योतिष-शिक्षा, बी0एल0 ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1998
9. भृगु संहिता महाशास्त्र, आचार्य भृगु पण्डित केवल आनन्द जोशी, राधा पॉकेट बुक्स, मेरठ, 1998
10. चमत्कार चिन्तामणि:, भट्टनारायण ब्रजबिहारीलाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1994
11. ग्रह-फल चन्द्रिका, जगदीश पण्डित, सुमित प्रकाशन, आगरा, 1991
12. फलदीपिका, श्री गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2015

4. लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति की तालिका 4

तालिका क्रमांक 4 : अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में लग्नानुसार द्वादश भावों में ग्रहों की स्थिति

लग्न	प्रथम भाव	द्वितीय भाव	तृतीय भाव	चतुर्थ भाव	पंचम् भाव	षष्ठम् भाव	सप्तम् भाव	अष्टम् भाव	नवम् भाव	दशम् भाव	एकादश भाव	द्वादश भाव
मेष 1			मंगल	सूर्य, बुध	शुक्र, शनि	केतु	चन्द्र			गुरू		राहु
मेष 2	शुक्र		सूर्य, बुध	मंगल,चन्द्र	राहु					गुरू, शनि	केतु	
मेष 3				शुक्र, राहु	गुरू	सूर्य, बुध, शनि	मंगल			चन्द्र, केतु		
मिथुन 1	बुध, मंगल , गुरू		राहु	चन्द्र					केतु	शुक्र		सूर्य, शनि
मिथुन 2		सूर्य	बुध, शुक्र		शनि	मंगल,केतु	चन्द्र, गुरू					राहु
कर्क		शुक्र, राहु	सूर्य	मंगल, बुध		शनि	गुरू	केतु	चन्द्र			
कन्या 1	चन्द्र		शनि, राहु		मंगल			सूर्य, बुध	शुक्र, केतु		गुरू	
कन्या 2	मंगल, राहु		गुरू	चन्द्र, शनि			केतु					सूर्य, बुध, शुक्र
कन्या 3	मंगल		केतु			शनि			गुरू, राहु		सूर्य, चन्द्र	बुध, शुक्र
तुला 1	मंगल			राहु			गुरू		चन्द्र	सूर्य, शुक्र, केतु	बुध	शनि
तुला 2		चन्द्र, गुरू	सूर्य, बुध, शनि	शुक्र	केतु	मंगल						राहु
धनु	गुरू, राहु			चन्द्र		शनि	केतु				मंगल	सूर्य, बुध, शुक्र
मकर 1				मंगल, केतु	चन्द्र, शुक्र	सूर्य	बुध		गुरू	राहु	शनि	
मकर 2	सूर्य	मंगल, शुक्र			चन्द्र	राहु				शनि	गुरू	बुध, केतु
मीन	गुरू, शुक्र	सूर्य	बुध	राहु	मंगल			चन्द्र		केतु	शनि	

****